वैदिक वाङ्मय में पुराण

नन्दलाल भारद्वाज[१०२]

अनेक विचारकों के अनुसार प्राचीन पुराण लगभग ईसा की की प्रारम्भिक शताब्दियों की रचना है। दिगम्बर जैन भी सातवीं शताब्दी के पश्चात् ही पुराण लिखने लगे थे[103]। पश्चिमी विद्वानों के अनुसार पुराण संस्कृत साहित्य की आधुनिक रचनाएँ हैं तथा अब से पहले लगभग एक हजार वर्षों से उद्भूत हुई हैं[104] । हर्षचरित के लेखक बाण (लगभग 625ई.) ने लिखा है कि उन्होने अपने गाँव में वायुपुराण की कथा का श्रवण किया था । कुमारिल ने भी (लगभग 700ई.) पुराण को धर्म का प्रमाण स्वीकार किया है। शंकर (नवीं शताब्दी) ने अपने भाष्य में लिखा है कि पुराण का आविर्भाव श्वास-प्रश्वास के समान सहज ही हुआ है। रामानुज (बारहवीं शताब्दी) ने अपने दार्शनिक ग्रन्थों में पुराण को प्राचीन ग्रन्थ के रूप में उल्लिखित किया है। अलवेरुनी (लगभग 1030 ई.) ने भी अट्ठारह पुराणों की सूची दी है। म.म.पं. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी ने अपने शोधपूर्ण लेख 'पुराणों की अनादिता' में पुराणों की प्राचीनता का उल्लेख इस प्रकार किया है-

''पुराणों में ही उनके सम्बन्ध में स्पष्ट लिखा है कि ब्रह्मा ने सब शास्त्रों से पहले पुराण का स्मरण किया और उसके बाद उनके मुख से चारों वेद प्रकट हुए । यह भी पुराणों में बताया गया है कि पहले पुराण एक ही था । वह बहुत ही विस्तृत कई कोटि की ग्रन्थ संख्या में था । कलियुग के आरम्भ में मनुष्यों की स्मृति और विचार बुद्धिकी दुर्बलता देखकर भगवान् वेदव्यास ने जहाँ वेद को चार संहिता रूप में विभाजित किया वहाँ पुराणों को भी संक्षिप्त कर अट्ठारह भागों में बाँट दिया। यह भी पुराणों में ही मिलता है कि वैवस्वत मन्वन्तर के इस अट्ठाइसवें कलियुग तक अट्ठाइस व्यास हो चुके हैं, जो प्रति कलियुग में पुराण विद्या का संक्षेप कर ग्रन्थ निर्माण करते रहे। उन सबके नाम भी कई पुराणों में लिखे मिलते हैं । इससे स्पष्ट हो जाता है कि पुराण विद्या अनादि है''।

ऋग्वेद में पुराण

ऋग्वेद में पुराण शब्द का प्रयोग अधिकांश मन्त्रों में उपलब्ध होता है-

'तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषता'[105] ।

अर्थात् पुराण समबन्धी प्राचीनतर कथा स्तुतियों द्वारा स्तोता लोग स्तुति करते हैं।

'सना पुराणमध्येमारात्'[106] ।

---

[102] शोधच्छात्र.वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान

[103] ब्रह्मवैवर्तपुराण एक वि. अध्य. पृ. सं. 13

[104] ब्रह्मवैवर्तपुराण एक वि. अध्य. पृ. सं. 13

[105] ऋग्वेद, 9/99/4

[106] ऋग्वेद, 3/54/9

अर्थात् अब मैं सदैव होने वाले पुराण का अध्ययन करता हूँ ।

'पुराणमोकः सख्यं शिवं वाम्'[107] । अर्थात् तुम दोनों का स्थान पुराण है तथा तुम्हारी मैत्री कल्याणप्रद है।

'चाकलृपेतेन ऋषयो मनुष्या यज्ञे जातेपितरोनः पुराणे'[108] ।

अर्थात् पुराण-वर्णित सृष्टि स्वरूप यज्ञसम्पन्न होने पर हमारे पितृपितामहादिक ऋषि, मनुष्य उत्पन्न हुए। इन उल्लेखों से प्रतीत होता है कि ऋग्वैदिक काल में पुराण का अस्तित्व अवश्य था ।

अथर्ववेद में पुराण

अथर्ववेद में पुराण शब्द इतिहास, गाथा तथा नाराशंसी शब्दों के साथ प्रयुक्त मिलता है। इसमें पुराण को 'उच्छिष्ट' संज्ञक ब्रह्म से उद्भूत बताया गया है ।

ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रिताः ।।[109]

पुराणविद् व्यक्तियों तथा पुराण का वर्णन उपलब्ध होता है ।

एतत् आसीद् भूमिः पूर्वायामद्ध तय इट् विदुः ।
यो वै तां विद्यान्नामया स मन्येत पुराणवित् ।।[110]

अथर्ववेद में सर्वाधार ईश्वर को पुराण की उत्पत्ति का कारण तथा प्रवक्ता बताया गया है।

यत्र स्कम्भः प्रजनयन्पुराणं व्यवर्तयत् ।
एकं तदङ्गं स्कम्भस्य पुराणमनुसंविदुः ।।[111]

इसके अतिरिक्त अथर्ववेद में अधिकांश स्थलों पर पुराण शब्द प्रयुक्त हुआ है[112] ।

ब्राह्मण ग्रन्थों में पुराण

शतपथ एवं गोपथ ब्राह्मणों में पुराण शब्द विभिन्न स्थलों पर प्रयुक्त हुआ है। गोपथ में कल्प, रहस्य, ब्राह्मण, उपनिषद्, इतिहास, अन्वाख्यात तथा पुराण के साथ वेद को उद्भूत बताया गया है । 'एवमिमे सर्वे वेदा निर्मिताः संकल्पाः सरहस्याः, सब्राह्मणाः सोपनिषत्काः ऐतिहासाः सामन्वाख्याताः सपुराणाः'।[113] गोपथ ब्राह्मण के दूसरे मन्त्र में पाँच वेदों के निर्मित होने का वर्णन है । पञ्चवेदान् निरमिमत सर्पवेदं पिशाचवेदमितिहासवेदं पुराणवेदम् । ''स खलु प्राच्या एव दिशः सर्पवेदं निरमिमत,

---

107 ऋग्वेद, 3/58/6

108 ऋग्वेद, 10/130/6

109 अथर्ववेद, 11/7/24

110 अथर्ववेद, 11/8/7

111 अथर्ववेद, 10/7/26

112 अथर्ववेद, 18/3/1, 15/6/10, 15/6/12, 7/7/24 तथा 15/6/4 आदि ।

113 गोपथ, पूर्वभाग, 2/10

दक्षिणस्याः पिशाचवेदं प्रतीच्या असुरवेदमुदीच्या इतिहासवेदं ध्रवायाञ्चेर्ध्वायाञ्च पुराणवेदम्''।[114] गोपथ ब्राह्मण में पुराण की वेद के समान स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार की गई है । इसका स्पष्टीकरण व्याहृतियों की उत्पत्तिसे होजाता है। इसी सन्दर्भ में वृधतादि पाँचों महाव्याहृतियों के उत्पत्तिस्थल होने के कारण गोपथ ब्राह्मण में इतिहास-पुराण का पार्थक्य स्पष्ट है। शतपथ ब्राह्मण में पुराण शब्द वेदरूप में प्रयुक्त हुआ है । 'अथाष्टमेऽहन्-मत्स्याश्च मत्स्यहनश्चोपसमेता भवन्ति । तानुपदिशतीतिहासो वेदः सोऽपमिति किञ्चिदितिहासमाचक्षीत'[115] । इसके अतिरिक्त शतपथ ब्राह्मण में पुराण शब्द अधिकांश स्थलों पर प्रयुक्त हुआ है[116] । ऐतरेय ब्रह्मण में देवासुर-संग्राम आदि प्रसंगों को इतिहास तथा सृष्टि सम्बन्धी वाक्यों को पुराण बताया गया है । ''देवासुरा संयत्ता असन्नित्यादय इतिहास इदं वा अग्रेनैवकिञ्चिदासीदित्यादिकं जगतः प्रागवस्थामुपक्रम्य सर्ग प्रतिपादकं वाक्य जातं पुराणम्''[117] ।

इस प्रकार ब्राह्मण सहित्य में पुराणों के अस्तित्व का परिचय भली-भाँति उपलब्ध होता है।

आरण्यक ग्रन्थों में पुराण

आरण्यक ग्रन्थों में 'पुराण' का अस्तित्व प्रमाणित होता है। तैत्तिरीय आरण्यक में ब्रह्मज्ञय के प्रसंग में 'पुराणानि' पद का प्रयोग हुआ है । ''ब्रह्मयज्ञ प्रकरणेयद्-ब्राह्मणः सायुज्यमृषयोऽगच्छन्''[118]। बृहदारण्यक उपनिषद् में पुराण की उत्पत्ति परमात्मा के श्वास-प्रश्वास से स्वतः ही बताई गई है[119]। बृहदारण्यक भाष्य में शंकराचार्य ने 'उर्वशीहाप्सरा' इत्यादि ब्राह्मण भाग को इतिहास तथा 'असद्वा इदमग्र आसीत्' इत्यादि सृष्टि प्रक्रिया परक वाक्यों को पुराण कहा है । तैत्तिरीय आरण्यक में बाह्मणों, इतिहासों, पुराणों एवं नाराशंसी गाथाओं की चर्चा हुई है ।''ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्यान्गाथा नाराशंसी''[120]। बृहदारण्यक में भी इतिहास-पुराण का उल्लेख हुआ है[121] । इस प्रकार आरण्यक ग्रन्थों में भी 'पुराण' शब्द की प्राचीनता सिद्ध होती है।

उपनिषद् ग्रन्थों में पुराण

छान्दोग्य उपनिषद् में इतिहास-पुराण को पंचमवेद कहकर ब्रह्मरूप से उपासना करने की शिक्षा दी है ''ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमम्, वेदानां वेदं, पित्र्यं

---

114 गोपथ, पूर्वभाग, 1/10

115 शतपथ, 13/4/3/12-13

116 शतपथ, 11/5/6/8, 11/5/7/9, 14/6/10/6

117 ऐतरेयब्राह्मण

118 तैत्तिरीय आरण्यक, 2 प्रपाठक, 9 अनुवाक

119 बृहदारण्यक उप., 2/4/11

120 तैत्तिरीय आरण्यक, 2/10

121 बृहदारण्यक, 4/1/2

राशिं''[122] तथा अतीत के आख्यानों के लिए इतिहास -पुराण दोनों ही शब्द प्रयुक्त हुए हैं । अत: इन उदाहरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उपनिषद् काल में पुराणों का अस्तित्व अवश्य था ।

गृह्य सूत्र में पुराण

प्राय: सूत्रकाल तक पुराणों को वर्तमान स्वरूप प्राप्त हो गया था । गौतम धर्मसूत्र[123] में सुव्यवस्थित शासन व्यवस्था हेतु राजा के लिए वेद, धर्मशास्त्र, वेदांग तथा पुराण का आश्रय लेने का आदेश है। आश्वलायनगृह्यसूत्र में दीर्घायु मनुष्यों को कथाओं तथा मांगलिक इतिहास-पुराणों का पाठ करने का संकेत मिलता है[124] । इसी के एक मन्त्र में इतिहास-पुराणों के स्वाध्याय करने वाले व्यक्ति के देवों एवं पितरों को अमृत की कृपा प्राप्त होने का तथ्य उद्घाटित किया गया है । आपस्तम्ब धर्मसूत्र में भविष्यपुराण[125] का उल्लेख है-

आभूत-संपलवास्तेस्वर्गजित:, पुन: सर्गे बीजार्था भवन्तीति भविष्यत्पुराणे'। आपस्तम्ब के इस उल्लेख से यही प्रतीत होता है कि उस काल में 'भविष्यत् पुराण' नामक कोई पुराण अवश्य उपलब्ध था । आप. थ. सू. में ब्राह्मण के मारने के प्रसंग में पुराणों की सम्मति का उल्लेख है-

यो हिंसार्थमभिक्रान्तं हन्ति मन्युरेव मन्युं स्पृशति, न तस्मिन् दोष इति पुराणे[126]।

अत: सूत्रग्रन्थों में 'पुराण' शब्द का प्रयोग हुआ है।

उपर्युक्त समस्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि वैदिक वाङ्मय (ऋग्वेद,अथर्ववेद, ब्राह्मण,आरण्यक,उपनिषद तथा गृह्यसूत्र) में पुराणों के अस्तित्व का वर्णन भली-भाँति उपलब्ध होता है।

---

122 छा. उप. 2/1/2, 7/1/4, 7/2/1, 3/4/1-2

123 गौतम धर्मसूत्र, 11/19

124 आश्वालायन, गृ., 4/6

125 आश्वालायन, गृ., 1/10/29/7

126 ब्रह्मवैवर्तपुराण एक वि. अध्य. पृ. सं. 15